Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal Impact Factor 5.69 ISSN No. 2456-1665

'यामिनी कथा' : स्त्री व्यथा की कहानी

लक्ष्मण उद्धवराव खरात
शोध छात्र,
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर
मराठवाडा विश्वविद्यालय, छत्रपति संभाजीनगर
दुरभाष ९४०३२०३२१३

समकालीन हिंदी कथा साहित्य में नारी विमर्श का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान समय में नारी लेखन को बहुत ही महत्त्व प्राप्त हो रहा है। भारत में ही नहीं विश्व में भी नारी मुक्ति, नारी समानता, नारी अस्मिता की खोज आदि विषयों को महिला, साहित्यकारों ने अपने साहित्य में चित्रित किया है। नारी विमर्श की बात १९७०के नारी आंदोलन से शुरू हुई है। नारी विमर्श के संबंध में डॉ. कामिनी तिवारी कहती है "उत्तरशती के हिंदी साहित्य में नारी की अहम् भूमिका रही है। फलस्वरूप नारी जीवन हाशिए पर था वह परिधि में आया। उसके अस्तित्व एवं व्यक्तित्व को रेखांकित किया गया। साम्प्रतिक महिला लेखन स्वानुभूति का प्रामाणिक दस्तावेज है ।"[१]

समकालीन महिला उपन्यासकारों में सूर्यबाला एक सजग साहित्यकार के रूप में उभरकर सामने आयी है। सूर्यबाला ने नारी जीवन की त्रासदी, विसंगति तथा आधुनिक परिवेश में नारी के बदलते आयामों को सजीव रूप में अभिव्यक्त किया है। साहित्यकार अपने समकालीन स्थिति से सजग होकर समाज का वास्तविक चित्रण अंकित करता है। सूर्यबाला के साहित्य में नारी चरित्र लीक से हटकर नया मार्ग ही नहीं ढूँढते बल्कि इसी मार्ग पर चलकर नये विश्व और विश्वास का निर्माण करते हैं ।

अपने उपन्यासों में स्त्री विमर्श के विभिन्न पहलुओं को सूर्यबाला ने उजागर किया है। स्त्री विमर्श के बारे में सूर्यबाला कहती है "मेरे दृष्टि में नारी विमर्श का अर्थ स्त्री का मन, स्त्री की सोच दृष्टि, समस्याओं ओर स्थितियों का विवेचन है। स्त्री के वैयक्तिक और सामाजिक परिपार्श्व के बोध का स्त्री जीवन है। इसका परत दर परत विश्लेषण ही स्त्री विमर्श है।"[२]

सूर्यबाला ने हिंदी साहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। सूर्यबाला के अब तक छंह उपन्यास, दस कहानी संग्रह तथा तीन व्यंग्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं। लेकिन 'यामिनी कथा' यह उपन्यास सूर्यबाला के रचनात्मक जगत की सबसे सशक्त रचना मानी जा सकती है। क्योंकि 'यामिनी कथा में सूर्यबाला ने एक भारतीय नारी की त्रासदी भरी करूण गाथा का चित्रण किया है। 'यामिनी कथा' के चार प्रमुख पात्र हैं नायिका यानिनी, विश्वास, निखिल और पुतुल ।

"यामिनी कथा' में यामिनी के मानसिक भंवर की अथाह गहराई, उसकी गंभीरता, उसमें सम्मिलित गोचर अगोचर अनगिनत मानसिक संवेदना प्रवाहों का विशद रूपायन, आधुनिक नारी के जटिल तनाव, लगातार सुक्ष्म संवेदनात्मक त्रासदी की कभी खत्म न होनेवाली प्रदीर्घता और इसी बीच किसी तरह संतुलन के लिए सफल असफल प्रयास करने में अभिव्यक्त जिजीविषा के शक्तिपूर्ण और कलात्मक दर्शन होते हैं।"[३] सूर्यबाला की नायिकाओं की हमेशा से यह खासियत रही है कि वे अपने जीवन में भावात्मकता की सम्पत्ति को लेकर जीति आयी है। यामिनी को भी इसका अपवाद नहीं माना जा सकता है ।

सूर्यबाला के 'यामिनी कथा की यामिनी एक अतिशय संवेदनशील नारी है। जिसकी संवेदना ने उसके अनुभव को विलक्षण धार दी है। बाहयतः यामिनी सूखी है। परंतु उसके चिन्तनशील मानस ने और अनुभूतिप्रवण हृदय ने उसके सामने सदैव यातना, दंश, पीड़ा का जाल ही बिछाया है। यामिनी कहती है, "मैं सॉस की बोतल बढ़ाती हुई अंदर-अंदर जैसे एक गहरे भँवर में डुबती जा रही हूँ। घड़ी की हर बढ़ती टिक टिक के साथ सीर्फ एक ही सस्पेंस-गहरा और गहरा, घुटता और घुटता अंत में बाहर आ ही जाता है।"[४] वर्तमान समय में यही स्थिति दिखाई दे रही है।

'यामिनी कथा एक स्त्री की संवेदनात्मक जटिलता उसके मानसिक तनावों और उसके आत्मसंघर्ष की मर्मस्पर्शी कथा है। यामिनी की अथाह वेदना के अनेक मूल केंद्र है। यामिनी के दुःख का प्रारंभ उसके असफल विवाह (विश्वास) से होता है। उसका पति केवल नाम मात्र के लिए 'विश्वास' है, लेकिन यामिनी को उससे हमेशा अविश्वास ही मिलता है। अपने पहले पति 'विश्वास' से यामिनी को वह प्रेम, अपनत्व और विश्वास नहीं मिला, जिसकी चाहत हर स्त्री को होती है। वह विश्वास से कुछ अधिक चाहती है वह प्यार जो शरीर से उत्पन्न होता हुआ भी मानसिक और आत्मिक अधिक है। परंतु उसके पूर्ण समर्पण में भी विश्वास उसे वह प्यार नहीं दे पाता, क्योंकि स्त्री की ओर उसने विशेष सम्मान की दृष्टि से कभी देखा ही नहीं है। वह यामिनी को सीर्फ एक चीज की तरह इस्तेमाल करता है। जब-जब भी जहाज की नौकरी करते हुए विश्वास घर आता है तो न जाने कितनी तरह के पर्फ्यूम, शिफॉन, कैसेट्स, हीरे और पता नहीं कितनी-कितनी चीजों से लदा-फदा आता है और सब में सब बॉट कर अपना 'प्राप्य' लेकर लौट जाता है।यामिनी के दिल में झाँकने की उसने न तो कोशिश की न ही इसकी जरूरत समझी। एक घुम्मकड़ की यही तो सोच होती है "लो, अब मुझे जितना चाहिए था, ले लिया कोई जबरदस्ती है क्या ? यहाँ से बस इतना ही कोयला-पानी बाकी इसके आगे के बंदरगाहों पर ।"[५] इससे पता चलता है कि वैयक्तिक स्वतंत्रता के पक्षधर विश्वास का भरोसा आस्था, प्रणय और समर्पण जैसे शब्दों में नहीं है।

यामिनी को विश्वास का विश्वास भी तब मिलने लगा जब वह पुतुल को जन्म देती है। लेकिन विश्वास का विश्वास नियति को मंजूर नहीं है। विश्वास कैंसर की गिरफ्त में आता है। इस संवेदनात्मक बदलाव के बीच

Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.69
ISSN No. 2456-1665

यामिनी के संघर्ष की वीरगाथा भी सरकती जाती है जो संघर्ष उसने पति की जान बचाने के लिए किया और किसी बिंदु पर अपने असफल संघर्ष की परिणति से रू-ब-रू होते हुए भी वह अपनी शांति के लिए अपने को झोंक देती है। यहाँ पर एक भारतीय नारी का उज्ज्वल चित्र सूर्यबाला प्रस्तुत करती है। यहाँ यामिनी एक ओर अपने पति विश्वास का प्यार पाने के लिए संघर्ष करती रही तो दूसरी ओर विश्वास की मृत्यु के बार वैधव्य झेलती नारी की मनोदशा, आर्थिक तंगी, अंदर-बाहर का अभाव तथा बाहरी और आंतरिक संघर्ष यामिनी को चैन नहीं लेने देता।

भारतीय पुरुषवादी संस्कृति एक युवा विधवा को प्रायः अच्छी नजर से नहीं देखती। किन्तु परम्परावादी सास तो वैधव्य का दोष भी बहु की बदकिस्मती को ही देती है। विश्वास की माँ कहती है - "तेरा ही दुर्भाग्य था कि मेरा बेटा मुझसे छिन गया। यही नहीं एक दिन यामिनी को बैंक से घर पहुँचने में विलंब होता है तो उसके चरित्र पर भी शंका की जाती है। उसकी सास कहती है- "इतनी देर तक कौन सा बैंक खुला रहता है, यामिनी ?"[६]

सूर्यबाला के उपन्यासों में नारी विमर्श के अन्तर्गत विधवा समस्या को भी स्पष्टता से चित्रित किया है। सूर्यबाला ने नारी विमर्श के अन्तर्गत पुनर्विवाह का समर्थन भी किया है। यामिनी का पुनर्विवाह विश्वास की माँ को अच्छा नहीं लगता है। बिघड़ती आर्थिक स्थिति, निस्सहाय-निरवलंब अकेलापन और अंधकारमय भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए वह निखिल से शादी करती है। यामिनी चुनचुन को जन्म देती है तो यामिनी की भूमिका और भी कठिन हो जाती है। एक ओर विश्वास का स्मृति संदर्भ है, दूसरी ओर पुतुल का अनेक स्तरीय खिंचाव है। तीसरी ओर चुनचुन है और चौथी ओर पहले विवाह की सूख प्राप्ति की स्वाभाविक कांक्षा से आतुर निखिल खड़ा है। यामिनी एक उलझे हुए अनुभव संसार के बीच गुंथी सी हुई है। वह निखिल और पुतुल को एक साथ पाना चाह रही थी, लेकिन दोनों ही हाथ से छुटते जा रहे थे। वह एक विभक्त माँ और एक विभक्त पत्नी बन कर रह गई थी। इस तरह नायिका को निरंतर स्थिति से संघर्ष करना पड़ता है। सूर्यबाला ने 'यामिनी कथा' के माध्यम से यामिनी के मानसिक अन्तर्द्वंद्व का चित्रण प्रस्तुत किया है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यामिनी चारित्र्यशील नारी है। उसका पति जहाज पे होते हुए भी वह एकनिष्ठ रहती है। स्त्री विमर्श के विविध पहलुओं को प्रामाणिकता से व्यक्त करती है सूर्यबाला का यह उपन्यास विचारोत्तेजक है और रोचक भी है।

सूर्यबाला का प्रमुख सरोकार मनुष्य के मन की अद्‌भुतता को दिखाता है। "सूर्यबाला का भारतीय संस्कारों में संस्कारित मन अभी पूरी तरह एक कलाकार की यथार्थ से चार आँखे करने की चुनौती पूर्णता में नहीं स्वीकार रहा है। अन्यथा दो पुरूषों के साथ विवाह और शरीर संबंध के स्वरूप का एक अछुता कोना भी इसमें था जिसका संकेत कहानी में नहीं मिलता।"[७]इस तरह सूर्यबाला ने वास्तविक यथार्थ को अभिव्यक्ति दी

है। सूर्यबाला ने यहाँ पर अनुभूति एवं अभिव्यक्ति का विलक्षण समन्वय दिखाया है। सूर्यबाला ने भी यामिनी की पीड़ा को, त्रासदी को अनुभव किया होगा इसके फलस्वरूप ही सूर्यबाला ने इतना सशक्त उपन्यास लिखा है। इस कथन के बारे में प्रमोद त्रिवेदी कहते हैं "मैं इतना जरूर कह सकता हूँ कि 'यामिनी कथा' को रचते हुए लेखिका ने भी यामिनी के तनाव को, उसकी पीड़ा विवशताओं को गहराई से झेला होगा क्योंकि यामिनी पात्र ही ऐसा है जो आपकी संवेदना पर पूरा कब्जा कर लेता है।"[८] इससे स्पष्ट होता है कि सूर्यबाला ने स्वयं स्त्री की त्रासदी, पीड़ा, वेदना और कसक को अनुभूति से महसूस किया है।

कुलमिलाकर कह सकते हैं कि सूर्यबाला ने 'यामिनी कथा' उपन्यास के माध्यम से एक संघर्षशील, संवेदनशील नारी को प्रस्तुत किया है। यामिनी के जिंदगी की करूण कहानी सूर्यबाला ने कागज पर एक कलात्मक ढंग से अंकित की है। प्रस्तुत उपन्यास 'यामिनी कथा' के कारण सूर्यबाला हिंदी के महत्त्वपूर्ण लेखिकाओं में आ गयी है। सूर्यबाला ने अपने इस उपन्यास में स्त्री की व्यथा को दर्शाया है। उपन्यास के अन्त में यामिनी का बेटा पुतुल के मर्चेण्ट नेवी में प्रवेश लेने का निर्णय कहीं 'यामिनी कथा की यामिनी की पुनरावृत्ति की भूमिका तो नहीं ?

निष्कर्षतः कहा जा सकता है सूर्यबाला के साहित्य में दाम्पत्य जीवन सम्बन्ध दिखाई देते हैं। विधवा-विवाह का समर्थन समय की प्रखर मांग है जिसकी उपेक्षा करना समाज के लिए घातक हो सकता है। पुरूष की पत्नी मर जाती है तो वह तीसरे दिन विवाह कर लेता है फिर एक स्त्री क्यों नहीं **?** क्या स्त्री भावनाहीन है**?** अंत में इतना ही कह सकते हैं कि सूर्यबाला ने अपनी रचना में विधवा समस्या, पति-पत्नी के संघर्ष की समस्या, अकेलेपन की समस्या, एक माँ की घूटन, ममत्व तथा पत्नी धर्म आदि विविध आयाम दृष्टिगत होते हैं।

संदर्भ :

१) प्रभा खेतान के उपन्यास में व्यक्त नारी विषयक चिन्तन - डॉ. कामिनी तिवारी, पृ. 23

२) हिंदी उपन्यास नारी विमर्श - डॉ. शोभा वेरेकर, पृ. 179

३) यामिनी कथा - सूर्यबाला, भूमिका से

४) वही, पृ. 18

५) वही, पृ. 29

६) वही, पृ. 74

७) संचेतना - अक्तुबर 2010, महिप सिंह, पृ. 16

८) वही, पृ. 20